गगास

द्विमासिक ई पत्रिका

उत्तराखण्ड शासन

अंक-08

डॉ0 प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय
भिकियासैंण (अल्मोड़ा)

दिसंबर-जनवरी
2026

“Culture is the soul of a society, and education is the light that carries it from one generation to the next.”

Mahatma Gandhi

संपादक मण्डल

संपादक– डॉ० इला बिष्ट, असि० प्रो० समाजशास्त्र

सहसंपादक– डॉ० परितोष उप्रेती, असि० प्रो० भूगोल

छात्रा संपादक– निशा रावत, बी०ए० पंचम सेमेस्टर
छात्र संपादक– सुमित बिष्ट, बी०ए० पंचम सेमेस्टर

तकनीकी सहयोग– श्री पूरन सिंह जलाल

सलाहकार– 1– डॉ० दीपा लोहनी, असि० प्रो० इतिहास
2– डॉ० सुभाष चन्द्र आर्य, असि० प्रो० हिन्दी

आवरण– हर्षिता पांडे, बी०ए० तृतीय सेमेस्टर

प्राचार्य एवं संरक्षक

प्रो० शर्मिला सक्सेना,
प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, भिकियासैंण (अल्मोड़ा)

विषयानुक्रमणिका

01- शुभकामना संदेश

02- संपादकीय

03- विद्यार्थियों की कलम से

04- अतिथि की कलम से

06- उपलब्धियां

07- सुर्ख़ियों में महाविद्यालय

08- मीमांसा

09- महाविद्यालय परिवार

10- इनफॉरमेशन डेस्क

कार्यालय, स्वामी विवेकानन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय लोहाघाट (चम्पावत)

Email-govtpgcollegelohaghat@gmail.com
Website-www.svpgcollege.org.in

शुभकामना संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण (अल्मोड़ा) द्विमासिक ई–पत्रिका ''गगास'' के अष्ठम अंक प्रकाशित करने जा रहा है। पत्रिका महाविद्यालय में संचालित विभिन्न शैक्षणिक एवं शिक्षण–सहगतिविधियों का दपर्ण होती है, जो अध्ययनरत् विद्यार्थियों में अर्न्तनिहित प्रतिभाओं के विकास एवं अभिव्यक्ति का सुलभ अवसर प्रदान करती है।

विद्यार्थियों में रचनात्मकता का विकास उच्च शिक्षण संस्थान का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य होता है, मुझे आशा ही नही पूर्ण विश्वास है कि यह द्विमासिक ई–पत्रिका ''गगास'' विद्यार्थियों में रचनात्मकता का विकास करने में एक सशक्त माध्यम होगी। प्राध्यापकों के आलेख एवं रचनाऐं विद्यार्थियों के लिए अधिगम में प्रेरणा का स्त्रोत बनेंगी।

मैं उक्त पत्रिका के प्रकाशन के लिए महाविद्यालय के प्राचार्य, सम्पादक मण्डल, समस्त प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों को हार्दिक शुभकामनाऐं प्रेषित करती हूँ।

SGupta 25.02.26

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द रा०स्ना०महा०वि०
लोहाघाट चम्पावत

प्राचार्य
प्रो.(डॉ.) संगीता गुप्ता
स्वामी विवेकानन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
लोहाघाट (चम्पावत) उत्तराखण्ड।

शुभकामना संदेश

शुभकामना संदेश

मैं डॉ. प्रताप बिष्ट,राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण द्वारा प्रकाशित की जा रही ई पत्रिका गगास अंक 8 के लिए महाविद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। यह पत्रिका पाठकों लिए ज्ञान, विचारों और प्रेरणा का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, और मुझे उम्मीद है कि यह पाठकों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाएगी।पत्रिका में विभिन्न विषयों पर लेख, आपके मन को प्रेरित करेंगी और आपके ज्ञान में वृद्धि करेंगे। पत्रिका के लेखकों और योगदानकर्ताओं ने अपने अनुभव और ज्ञान को इस पत्रिका में साझा किया है, और मुझे उम्मीद है कि आप इसे पढ़कर लाभ उठाएंगे।

पत्रिका पाठकों के लिए एक उपयोगी संसाधन बने, उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाए और आपको अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करे।मैं पत्रिका के अंक 8 के लिए एक बार फिर से हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। मुझे उम्मीद है कि आपको यह पत्रिका पसंद आएगी और यह आपके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाएगी।

वार्ड मैम्बर
वार्ड नं0-1 (गांधीनगर वार्ड)
नगर पंचायत- भिकियासैंण
जिला-अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

सभासद वार्ड नं0-01
भिकियासैंण (अल्मोड़ा)

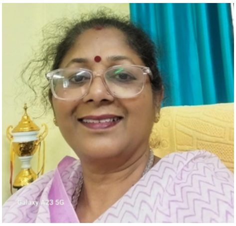

प्राचार्य का संदेश

प्रो० (डा०) शर्मिला सक्सेना

द्विमासिक ई–पत्रिका 'गगास' के माध्यम से संपादक मंडल द्वारा छात्र–छात्राओं को रचनात्मक अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करने का सराहनीय कार्य सतत रूप से किया जा रहा है इसके लिए उन्हें साधुवाद एवं शुभकामनाएँ।

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में पत्र–पत्रिकाएँ बेहद अहम भूमिका निभाती है और महाविद्यालय की पत्र–पत्रिकाएँ उन्हें जीवन भर पठन –पाठन से सतत जुड़े रहने की प्रेरणा प्रदान करती है। ना जाने कितने सुगंधित पुष्पों के सुप्त बीज सुअवसर पाते ही पुष्पित और पल्लवित हो उठते हैं।

महाविद्यालय परिवार का यह प्रयास सार्थक हो, अनवरत रहे। इसी सुखद कामना के साथ...

प्रो० (डा०) शर्मिला सक्सेना

संपादकीय

महाविद्यालय जीवन केवल शैक्षणिक उपलब्धियां तक सीमित नहीं होता बल्कि यह छात्र-छात्राओं की प्रतिभा, सृजन क्षमता एवं व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण आधार भी बनता है. इसी उद्देश्य को साकार करने में महाविद्यालय की द्वि-मासिक ई-पत्रिका 'गगास' एक सशक्त माध्यम की भूमिका निभाती है. इस अंक में छात्र-छात्राओं द्वारा विभिन्न प्रकरण में लिखे गए लेख तथा विगत दो माह में महाविद्यालय में हुई विभिन्न गतिविधियों का संकलन है.

प्रस्तुत अंक में छात्र संपादक सुमित बिष्ट द्वारा महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय विषय 'Iran and America: A History of Conflict and Tension' पर विस्तृत लेख लिखा गया है. साथ ही उत्तराखंड की खाद्य संस्कृति से पाठकों को परिचित कराते हुए छात्रा संपादक निशा रावत द्वारा 'उत्तराखंड के प्रमुख व्यंजन' पर लेख प्रस्तुत किया गया है. अन्य स्तंभों यथा, 'गुरु की लेखनी' तथा 'अतिथि की कलम से', में भी कई महत्वपूर्ण और ज्ञानवर्धक लेख प्रस्तुत किए गए हैं.

मुझे पूरा विश्वास है कि गगास का यह संस्करण छात्र-छात्राओं में पठन-पाठन के इतर उनमें छुपी हुई प्रतिभा को प्रदर्शित करने के लिए उत्तम मंच साबित होगा. अंत में, मैं अपने संपादकीय मण्डल का आभार और धन्यवाद व्यक्त करती हूं.

सह संपादक
डॉ इंदिरा
प्रभारी भौतिक विज्ञान विभाग

Iran and America: A History of Conflict and Tension

Introduction

The relationship between Iran and the United States of America has been one of the most complex and turbulent diplomatic relationships in modern world history. What began as a close alliance in the mid-twentieth century gradually transformed into a deep-seated rivalry marked by sanctions, proxy conflicts, and military confrontations. Understanding this relationship requires a careful examination of historical, political, and geopolitical factors that have shaped the two nations' interactions over decades.

Historical Background

The roots of the Iran-America conflict can be traced back to 1953, when the United States Central Intelligence Agency (CIA), in collaboration with British intelligence, orchestrated the overthrow of Iran's democratically elected Prime Minister Mohammad Mosaddegh. This event, known as Operation Ajax, was carried out to protect Western oil interests in Iran and to reinstall Shah Mohammad Reza Pahlavi as a pro-Western ruler. This intervention left a deep wound in the Iranian national consciousness and planted the seeds of anti-American sentiment.

During the Shah's reign, Iran and America maintained strong ties. However, the Shah's authoritarian rule and his close association with the United States generated widespread public resentment within Iran.

The Islamic Revolution of 1979

The most defining turning point in Iran-America relations came with the Iranian Islamic Revolution of 1979, led by Ayatollah Ruhollah Khomeini. The Shah was overthrown, and Iran was declared an Islamic Republic. The new government was strongly anti-American, referring to the United States as the "Great Satan."

The crisis deepened when Iranian students seized the U.S. Embassy in Tehran on November 4, 1979, taking 52 American diplomats hostage for 444 days. This event, known as the Iran Hostage Crisis, led to the complete breakdown of diplomatic relations between the two countries — relations that have never been formally restored to this day.

Major Points of Conflict

1. Nuclear Programme

One of the most significant sources of tension in recent decades has been Iran's nuclear programme. The United States and Western nations have long suspected that Iran seeks to develop nuclear weapons, while Iran maintains that its programme is purely for peaceful energy purposes. This dispute led to severe economic sanctions on Iran by the U.S. and international community.

In 2015, the landmark Joint Comprehensive Plan of Action (JCPOA), commonly known as the Iran Nuclear Deal, was signed between Iran and world powers including the USA. However, in 2018, U.S. President Donald Trump unilaterally withdrew from the deal and reimposed harsh sanctions on Iran, escalating tensions once again.

2. Proxy Wars and Regional Influence
Iran and America have frequently found themselves on opposing sides of regional conflicts across the Middle East. Iran supports groups such as Hezbollah in Lebanon, Hamas in Palestine, and various Shia militias in Iraq, Syria, and Yemen — all of which are considered adversaries by the United States. This network of proxy influence has been a continuous source of friction.

3. Assassination of General Qasem Soleimani (2020)
One of the most dramatic escalations in recent history occurred on January 3, 2020, when the United States carried out a drone strike at Baghdad International Airport, killing Major General Qasem Soleimani, the commander of Iran's elite Quds Force. Soleimani was one of the most powerful military figures in Iran and was regarded as a national hero by many Iranians.

Iran responded with ballistic missile strikes on U.S. military bases in Iraq, and the world feared that the two nations were on the brink of a full-scale war. Fortunately, the situation de-escalated, but it highlighted just how volatile the relationship between the two countries remains.

4. Economic Sanctions
The United States has imposed extensive economic sanctions on Iran over the years, targeting its oil exports, banking system, and key industries. These sanctions have severely impacted the Iranian economy and the daily lives of ordinary Iranian citizens, further fueling anti-American sentiment within the country.

Recent Developments
Tensions between Iran and America have continued to simmer in recent years. Iran has steadily advanced its nuclear enrichment programme beyond the limits set by the JCPOA. Meanwhile, the United States has maintained its policy of "maximum pressure" against Iran. Various diplomatic efforts have been made to revive the nuclear deal, but no comprehensive agreement has been reached. In the context of the Israel-Gaza conflict (2023–2024), Iran-backed groups launched attacks on U.S. military positions in the region, and the U.S. responded with targeted strikes. This further underscored the ongoing nature of the indirect conflict between Washington and Tehran.

Consequences of the Conflict
The Iran-America conflict has had far-reaching consequences:

Regional Instability: The Middle East has been plunged into prolonged instability as both nations pursue their competing interests through proxy actors.

Humanitarian Impact: Economic sanctions have caused significant suffering for the Iranian civilian population.
Global Oil Markets: Tensions in the Persian Gulf frequently affect global oil prices, impacting economies worldwide.

Nuclear Proliferation Risk: The failure to reach a lasting nuclear agreement poses a serious risk of nuclear proliferation in one of the world's most volatile regions.

Conclusion

The conflict between Iran and the United States is not a simple story of good versus evil — it is a deeply complex geopolitical struggle rooted in historical grievances, ideological differences, and competing national interests. Both nations have paid a heavy price for their prolonged hostility. While full-scale direct war between the two powers has been avoided so far, the underlying tensions remain unresolved.

For lasting peace and stability in the Middle East and beyond, it is essential that both Iran and the United States engage in genuine and sustained diplomatic dialogue. A peaceful resolution, though difficult, is not impossible — and it remains the most desirable outcome for the people of both nations and for the world at large.

सुमित बिष्ट
बी0ए0 पंचम सेमेस्टर

उत्तराखण्ड के प्रमुख व्यंजन

"हिमालय की गोद में बसे उत्तराखंड के पहाड़ों में न सिर्फ खूबसूरत प्राकृतिक दृश्य हैं, बल्कि यहाँ का खान-पान भी अपनी सादगी, पौष्टिकता और अनोखे स्वाद के लिए प्रसिद्ध है।" पहाड़ी जीवनशैली और ठंडी जलवायु के अनुसार यहाँ के व्यंजन हल्के, स्वास्थ्यवर्धक और ऊर्जा देने वाले होते हैं। रोज़मर्रा के खाने में दाल-भात, आलू, मक्के और स्थानीय अनाज का अधिक प्रयोग होता है। साथ ही यहाँ के व्यंजन घी और ताजी जड़ी-बूटियों के साथ बनाए जाते हैं, जिससे हर पकवान स्वादिष्ट और पौष्टिक बनता है।यहां हर क्षेत्र के पकवानों की अपनी एक अलग विशिष्ट पहचान है, स्थान के साथ पकवान व उन्हें बनाने की विधि-सामग्री अलग होती जाती है और उनका स्वाद भी।

यहां उत्तराखण्ड के कुछ मुख्य व्यंजनों के बारे में विस्तार से दिया गया है -

1. डुबुक - डुबुक उत्तराखंड, खासकर कुमाऊँ क्षेत्र का पारंपरिक व्यंजन है। यह मुख्य रूप से स्थानीय दालों जैसे भट्ट गहत या उड़द की दाल से बनाया जाता है, जिसे रात भर भिगोकर पीसकर मसालों के साथ पकाया जाता है। यह स्वाद में हल्का, पौष्टिक और सर्दियों में शरीर को गर्म रखने वाला होता है। डुबुक न केवल ऊर्जा और प्रोटीन प्रदान करता है, बल्कि स्थानीय सामग्री और पारंपरिक तरीका इसे स्वस्थ, सादा और पर्यावरण-अनुकूल भोजन बनाता है।
है।

2. काफुली - उत्तराखंड के पारंपरिक व्यंजनों में काफुली (Kafuli) एक महत्वपूर्ण और लोकप्रिय पकवान है। पहाड़ी क्षेत्रों में उगने वाली हरी पत्तेदार सब्ज़ियों से बनने वाला यह व्यंजन न सिर्फ स्वादिष्ट होता है, बल्कि बेहद पौष्टिक भी माना जाता है। काफुली मुख्य रूप से पालक और मेथी के पत्तों को धीमी आँच पर पकाकर तैयार की जाने वाली एक गाढ़ी हरी ग्रेवी है।इसमें आयरन, कैल्शियम और पोटैशियम जैसे खनिज भी होते हैं, जो हड्डियों, रक्त निर्माण और दिल की सेहत के लिए अच्छे हैं। कम तेल और मसालों में बनने वाला काफुली, उत्तराखंड की सादगी और प्राकृतिक जीवनशैली का सुंदर प्रतीक है।

3. चुड़कानी (भट्टवाणी) - चुडकानी–भात उत्तराखंड, खासकर कुमाऊँ क्षेत्र का एक पारंपरिक और बेहद पसंद किया जाने वाला भोजन है। इसमें चुडकानी, यानी काली भट्ट से बनी गाढ़ी और हल्की मसालेदार दाल, और भात, यानी सादा उबला हुआ चावल दोनों को साथ परोसा जाता है।चुडकानी में उपयोग होने वाली काली भट्ट दाल प्रोटीन, आयरन, फाइबर, कैल्शियम और पोटैशियम से भरपूर होती है, जिससे यह शरीर को ऊर्जा, गर्माहट और मजबूत पाचन प्रदान करती है। वहीं भात (चावल) शरीर को कार्बोहाइड्रेट देता है, जो त्वरित ऊर्जा का मुख्य स्रोत है।

4. आलू के गुटके - आलू के गुटके उत्तराखंड का बेहद लोकप्रिय और स्वादिष्ट पारंपरिक व्यंजन है। इसे खासकर कुमाऊँ और गढ़वाल दोनों क्षेत्रों में बड़े चाव से खाया जाता है। इस व्यंजन में उबले हुए आलुओं को छोटे–छोटे टुकड़ों में काटकर सरसों के तेल में तड़के के साथ भुना जाता है। इसमें जाखिया या जीरा, सूखी लाल मिर्च, हल्दी, धनिया और नमक जैसे सरल मसालों का उपयोग किया जाता है, जिससे इसका स्वाद तीखा, चटपटा और पहाड़ी अंदाज़ वाला बनता है। इसमें आलू मुख्य रूप से कार्बोहाइड्रेट, विटामिन C, विटामिन B6, पोटैशियम और फाइबर प्रदान करते हैं।

5. भांग की चटनी - उत्तराखंड के गढ़वाल और कुमाऊँ क्षेत्रों में भांग की चटनी पारंपरिक रूप से बनाई जाती है। इसमें मुख्य रूप से भांग के बीज हल्का भूनकर, हरी मिर्च, अदरक, लहसुन और नमक के साथ पीसे जाते हैं। कभी-कभी इसमें नींबू का रस भी मिलाया जाता है।इस चटनी का स्वाद हल्का, तीखा और ताजगी भरा होता है।
भांग के बीज प्रोटीन, हेल्दी फैट्स, आयरन और फाइबर से भरपूर होते हैं, इसलिए यह स्वादिष्ट होने के साथ-साथ स्वास्थ्यवर्धक भी होती है।

6. झंगोरे की खीर - उत्तराखंड में झांगोरे की खीर एक पारंपरिक और स्वादिष्ट व्यंजन है, जो खासतौर पर त्योहारों और खास अवसरों पर बनाई जाती है। इसे झांगोरा, दूध, गुड़ या शक्कर, और सूखे मेवे जैसे बादाम, काजू और किशमिश से तैयार किया जाता है। झांगोरे को पहले भिगोकर या भूनकर दूध में पकाया जाता है, फिर उसमें मीठा और मेवे डालकर खीर बनाई जाती है। यह खीर स्वाद में मुलायम, मीठी और पौष्टिक होती है। झांगोरे में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, फाइबर, आयरन और मिनरल्स होते हैं, जबकि दूध कैल्शियम और प्रोटीन प्रदान करता है। उत्तराखंड की पारंपरिक थाली में झांगोरे की खीर स्वाद और पौष्टिकता का अद्भुत मेल मानी जाती है।

7. मडुवे की रोटी - उत्तराखंड में मडुवे की रोटी पारंपरिक पहाड़ी भोजन का अहम हिस्सा है। इसे बनाने के लिए मडुवे आटा लिया जाता है, जिसे पानी के साथ गूंधकर तवे पर गोल रोटियों के रूप में सेंका जाता है। यह रोटी स्वाद में हल्की, सादगी भरी और सुपाच्य होती है। मडुवे की रोटी को गुड़ व घी के साथ खाया जाता है। इसमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फाइबर, आयरन और कैल्शियम प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, जिससे यह न केवल स्वादिष्ट बल्कि स्वास्थ्यवर्धक और ऊर्जा देने वाला भोजन भी बन जाती है। उत्तराखंड के ग्रामीण और पहाड़ी क्षेत्रों में यह रोटी दैनिक आहार और त्योहारों में समान रूप से महत्व रखती है।

उत्तराखण्ड के व्यंजनों की विशेषताएं -

1. उत्तराखण्ड के व्यंजनों की प्रमुख विशेषता यह है कि यह सरल व प्राकृतिक स्वाद से भरपूर होते हैं।
2. उत्तराखंड के भोजन में क्षेत्रीय पहचान, प्राकृतिक जीवन और पहाड़ी संस्कृति झलकती है।
3. पहाड़ी जीवनशैली के अनुसार भोजन शरीर को गर्माहट और ऊर्जा देता है।
4. पहाड़ी व्यंजन प्रोटीन, फाइबर, आयरन, विटामिन और मिनरल्स से भरपूर होते हैं।
5. झांगोरे की खीर, भांग की चटनी, बाल-मिठाई जैसी चीज़ें विशेष अवसरों पर बनाई जाती हैं।
6. व्यंजनों में स्थानीय जड़ी-बूटियों व मसालों का प्रयोग किया जाता है।
7. स्थान व क्षेत्र के हिसाब से व्यंजनों में विविधता पाई जाती है।
8. व्यंजन बनाने में पारंपरिक पाक तकनीक का प्रयोग होता है।

निष्कर्ष -

उत्तराखंड के व्यंजन न केवल स्वादिष्ट और विविध हैं, बल्कि ये स्वास्थ्य और पोषण की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। पहाड़ी और मैदान क्षेत्रों में उगाए जाने वाले स्थानीय अनाज, सब्जियाँ और जड़ी-बूटियाँ इन व्यंजनों को प्राकृतिक और ऊर्जा-प्रदायक बनाती हैं। उत्तराखंड के भोजन में सरलता और हल्के मसालों का प्रयोग इसकी विशिष्टता को और बढ़ाता है। इसके अलावा, ये व्यंजन राज्य की सांस्कृतिक और पारंपरिक पहचान से गहराई से जुड़े हैं, क्योंकि पर्वों और सामाजिक आयोजनों में इन्हें विशेष रूप से तैयार किया जाता है। इस प्रकार, उत्तराखंड के व्यंजन न केवल स्वाद और पौष्टिकता प्रदान करते हैं, बल्कि यह राज्य की संस्कृति, परंपरा और जीवनशैली का भी सजीव प्रतिबिंब हैं।

निशा रावत
बी0ए0 षष्ठम सेमेस्टर

जलवायु परिवर्तन :चुनौती और समाधान

21वीं सदी मानव इतिहास का वह दौर है जहां विज्ञान व तकनीक ने अभूतपूर्व प्रगति की है परंतु इस प्रगति ने मानव जाति ही नहीं बल्कि पृथ्वी पर संपूर्ण जीवन के समक्ष एक गंभीर संकट खड़ा कर दिया है- जलवायु परिवर्तन। जलवायु परिवर्तन केवल पर्यावरणीय समस्या मात्रा नहीं है अपितु यह सामाजिक आर्थिक राजनीतिक वह नैतिक संकट भी बन चुका है।

जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न इस संकट के केंद्र में मानव गतिविधियां है और समाधान की कुंजी भी मानव के हाथ में है। विशेष रूप से युवा वर्ग जो किसी भी समाज की सबसे ऊर्जावान, रचनात्मक व परिवर्तनकारी शक्ति होता है जलवायु परिवर्तन से निपटने में निर्णायक भूमिका निभा सकता है ।आज का युवा केवल भविष्य का नागरिक ही नहीं बल्कि वर्तमान का सक्रिय सहभागी भी है।

जलवायु परिवर्तन से आशय है पृथ्वी के औसत जलवायु में दीर्घकालिक परिवर्तन यह परिवर्तन प्राकृतिक कारणों जैसे- ज्वालामुखी गतिविधियों, सौर विकिरण में बदलाव इत्यादि से भी हो सकता है परंतु वर्तमान संकट का प्रमुख कारण मानव गतिविधियां ही है।

जलवायु परिवर्तन का सबसे स्पष्ट प्रभाव वैश्विक तापमान में वृद्धि के रूप में दिखाई देता है। औद्योगिक क्रांति के बाद से कार्बन डाइऑक्साइड, मेथेन तथा अन्य ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन तेजी से बड़ा है जिस कारण पृथ्वी के तापमान में असामान्य वृद्धि हुई है। हिमनद तेजी से पिघल रहे हैं ,समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा है ,मौसम के स्वरूप में असंतुलन आ रहा है तथा जैव विविधता पर अभूतपूर्व संकट मंडरा रहा है।

जलवायु परिवर्तन आज केवल वैज्ञानिक चेतावनी ही नहीं बल्कि प्रत्यक्ष अनुभव बन चुका है। भारत जैसे देश में जलवायु परिवर्तन की चुनौती और अधिक जटिल हो जाती है; यहां एक और आर्थिक विकास व विशाल जनसंख्या की आवश्यकता
है तो दूसरी ओर पर्यावरण संरक्षण का उत्तरदायित्व। अनियमित मानसून कृषि व्यवस्था को प्रभावित कर रहा है जिससे किसानों की आय व खाद्य सुरक्षा पर संकट गहरा रहा है। बढ़ती गर्मी और प्रदूषण से स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं बढ़ रही हैं, तटीय क्षेत्र में समुद्र के बढ़ते जल स्तर से लाखों लोगों पर विस्थापन के बादल मंडरा रहे हैं तथा पर्वतीय राज्यों में हिमनदों के पिघलने से नदियों का प्रवाह व स्वच्छ जल उपलब्धता प्रभावित हो रही है।

इस गंभीर वैश्विक संकट के बीच युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है ।जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणामो का सबसे लंबा व दूरगामी प्रभाव युवाओं तथा आने वाली पीढ़ियों पर पढ़ने वाला है इसलिए समाधान प्रक्रिया में उनकी भागीदारी स्वाभाविक व आवश्यक है। आज विश्व भर में देखा जा रहा है कि युवा जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर अधिक जागरूक हो रहे हैं तथा इसके खिलाफ आवाज बुलंद कर रहे हैं। वह न केवल प्रश्न पूछ रहे हैं बल्कि समाधान भी खोज रहे हैं तथा व्यवस्था में उचित बदलाव की भी मांग कर रहे हैं।

युवाओं का पहला योगदान जागरूकता प्रसारित करने के क्षेत्र में दिखाई देता है। जलवायु परिवर्तन के प्रति जागरूकता से अब भी समाज का बड़ा हिस्सा अछूता है। युवा वर्ग सोशल मीडिया, लेखन, कला, जन संवाद, नुक्कड़ नाटक इत्यादि के माध्यम से इस विषय को आम हितधारकों की भाषा में समझा सकता है।जब लोग यह समझने लगेंगे की जलवायु परिवर्तन उनके स्वास्थ्य, भोजन ,रोजगार व भविष्य से प्रत्यक्षतः जुड़ा है तभी वास्तविक परिवर्तन की शुरुआत होगी।

व्यवहार परिवर्तन इस समस्या के समाधान का अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू है और इसमें युवाओं की भूमिका अग्रणी हो सकती है। ऊर्जा की बचत, जल संरक्षण, प्लास्टिक का कम उपयोग,कचरे का पृथक्करण, सार्वजनिक परिवहन का प्रयोग, पर्यावरण अनुकूल जीवन शैली जैसे कई ऐसे कदम है जिन्हें युवा स्वयं अपना कर अन्य के लिए मिसाल कायम कर सकते हैं। जब युवा अपने दैनिक जीवन में इस प्रकार के छोटे-छोटे पर सकारात्मक बदलाव करते हैं तो इसका सामुदायिक प्रभाव बड़ा होता है। यह समझना नितांत आवश्यक है कि जलवायु परिवर्तन से निपटने हेतु केवल सरकारों की जिम्मेदारी पर्याप्त नहीं है बल्कि संपूर्ण वैश्विक समुदाय की भागीदारी आवश्यक है।

शिक्षा व ज्ञान के क्षेत्र में भी युवा वर्ग की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। जलवायु शिक्षा को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिए अपितु इस जीवन से जोड़ना आवश्यक है। युवा स्वयंसेवकों के रूप में स्कूलों कॉलेजों तथा समुदायों में जाकर पर्यावरण संरक्षण, सतत विकास व जलवायु परिवर्तन के प्रभाव पर चर्चा कर सकते हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे युवा नवाचार व अनुसंधान के माध्यम से नए समाधान खोज सकते हैं।

तकनीक व नवाचार के क्षेत्र में युवा जलवायु परिवर्तन समाधान के अग्रदूत बन सकते हैं। आज का युवा डिजिटल तकनीक से गहराई से जुड़ा है जिसका ईस्टतम प्रयोग पर्यावरण संरक्षण हेतु किया जा सकता है। स्वच्छ ऊर्जा तकनीक, ई - वाहन,स्मार्ट ग्रिड, डेटा विश्लेषण,कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे क्षेत्रों में युवा अभिनय प्रयोग कर रहे हैं।कई युवा उद्यमी ऐसे स्टार्टअप शुरू कर रहे हैं जो पर्यावरण के अनुकूल उत्पादन व सेवा प्रदान करते हैं। यह प्रयास न केवल पर्यावरण संरक्षण बल्कि आर्थिक विकास हेतु भी लाभदायक है।

नीति व शासन के स्तर पर भी युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है।लोकतंत्र में

युवा वर्ग मतदाता के रूप में अपनी शक्ति का उपयोग कर सकते हैं तथा ऐसी नीतियों को अपना समर्थन दे सकते हैं जो जलवायु परिवर्तन के समाधान को प्राथमिकता देती हो। युवा संगठनों, अभियानों इत्यादि के माध्यम से विभिन्न संस्थाओं व सरकार की जलवायु परिवर्तन के प्रति जवाबदेही तय कर सकते हैं ।जब युवा नीति निर्माण प्रक्रिया में शामिल होते हैं तो भावी पीढ़ी की चिताओं को वर्तमान के निर्णय में स्थान मिलता है।

जलवायु परिवर्तन का एक प्रयोग सामाजिक न्याय से भी जुड़ा है। इसका दुष्प्रभाव सर्वाधिक हाशिए पर रहने वालौं तथा कमजोर समुदायों पर पड़ता है। युवा इस असमानता का संज्ञान लेकर जलवायु न्याय की अवधारणा को आगे बढ़ा सकते हैं ।युवा यह सुनिश्चित करने का प्रयास कर सकते हैं कि जलवायु परिवर्तन का समाधान समावेशी हो।

ग्रामीण युवाओं की भूमिका इस परिप्रेक्ष्य में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि उनका जीवन सीधे तौर पर प्रकृति से जुड़ा होता है ।सतत कृषि पद्धतियों को अपनाना, पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण तथा संसाधनों का विवेक पूर्ण उपयोग ग्रामीण युवाओं के माध्यम से संभव है। शहरी युवा शहरों को अधिक स्वच्छ, हरित व रहने योग्य बनाने में योगदान दे सकते हैं। शहरी बागवानी, वर्षा जल संचयन, हरित परिवहन इत्यादि के प्रयोग से शहरों के पर्यावरणीय दुष्प्रभाव को काम किया जा सकता है।

वैश्विक स्तर पर भी युवा जलवायु परिवर्तन के खिलाफ मोर्चा खुले हैं । अंतरराष्ट्रीय मंचों ,सम्मेलनों में युवाओं की भागीदारी दर्शाती है कि यह समस्या सीमाओं से परे है तथा इसका निदान भी सामूहिक प्रयासों से ही संभव है ।युवा विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद स्थापित कर वैश्विक नागरिक के रूप में सोच सकते हैं। यह वैश्विक दृष्टिकोण जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौती से निपटने हेतु नितांत आवश्यक है।

हालांकि युवाओं के सामने भी कई चुनौतियां हैं। संसाधनों का अभाव, बेरोजगारी ,सामाजिक दबाव, निर्णयन प्रक्रिया में सीमित भागीदारी इत्यादि द्वारा युवाओं के प्रयास बाधित होते हैं। बावजूद इसके युवा अपनी उर्जा, रचनात्मक तथा प्रतिबद्धता के बल पर इन चुनौतियों का सामना कर सकते हैं। समाज, सरकार व शैक्षणिक संस्थाओं की जिम्मेदारी है कि वह युवाओं को उचित मार्गदर्शन, अवसर व समर्थन प्रदान करें।

अंतत यह कहा जा सकता है कि जलवायु परिवर्तन की समस्या इतनी व्यापक है कि इसका समाधान किसी एक देश ,वर्ग या संस्था द्वारा संभव नहीं है ।यह एक साझा जिम्मेदारी है जिसमें केंद्रीय भूमिका युवाओं की है ।युवा न केवल इस समस्या से प्रभावित है बल्कि वह समाधान की सबसे बड़ी आशा भी है ।उनके विचार, नवाचार, नेतृत्व व संघर्ष से ही ऐसे भविष्य की कल्पना संभव है जहां विकास व पर्यावरण के बीच संतुलन हो ,प्रकृति के साथ सह अस्तित्व की भावना हो तथा भाभी पीढियां एक सुरक्षित, स्वस्थ व न्यायपूर्ण परिवेश में जीवन व्यतीत कर सकें।

यदि आज का युवा जागरुक वह संगठित होकर कदम उठाए तो जलवायु परिवर्तन की चुनौती को अवसर में बदला जा सकता है तथा एक हरित व सतत भविष्य का निर्माण किया जा सकता है। जलवायु परिवर्तन एक गंभीर समस्या है इसका समाधान केवल सरकार या वर्ग विशेष ही नहीं अपितु युवा भी कर सकते हैं। छोटे-छोटे प्रयास ही बड़ा बदलाव लाते हैं। आज जिम्मेदारी लेने पर ही कल सुरक्षित होगा।

"इससे पहले की कुछ ऐसा हो,
जिसे हम बदल नहीं सकते।
अब भी वक्त है, क्या हम संभल नहीं सकते?"

श्री हेम चंद्र कबड़वाल
प्रयोगशाला सहायक
वनस्पति विज्ञान

अतिथि की कलम से

बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) : एक परिचय

आज के दौर में हम जिस भी वस्तु का उपयोग करते हैं—मोबाइल फोन, दवाइयाँ, किताबें, गाने, फिल्में, ऐप्स या किसी कंपनी का लोगो—उन सबके पीछे किसी न किसी व्यक्ति की मेहनत, कल्पना और बुद्धि काम करती है। यही बौद्धिक श्रम जब कानूनी रूप से सुरक्षित किया जाता है, तो उसे *बौद्धिक संपदा अधिकार (INTELLECTUAL PROPERTY RIGHTS – IPR)* कहा जाता है।

सरल शब्दों में कहें तो जैसे घर, प्लाट, खेत, बाईक, साइकिल, या गाड़ी हमारी भौतिक संपत्ति होती है, वैसे ही हमारे विचार, आविष्कार, लेखन, संगीत, कला और डिजाइन हमारी *बौद्धिक संपत्ति* होते हैं। IPR इन अमूर्त (INTANGIBLE) संपत्तियों को सुरक्षा प्रदान करता है।

बौद्धिक संपदा क्या है?

जब कोई लेखक किताब, उपन्यास, फिल्म की कहानी या गीत लिखता है, कोई वैज्ञानिक नई दवा खोजता या वैक्सीन बनाता है, कोई छात्र नया ऐप बनाता है या कोई कलाकार चित्र बनाता है, तो वह केवल एक वस्तु नहीं बना रहा होता, बल्कि वह अपनी सोच, कल्पना और अनुभव को आकार दे रहा होता है। यही सृजन बौद्धिक संपदा कहलाता है।

उदाहरण के लिए, बागबान फिल्म एवं गोदान जैसी प्रसिद्ध कृति केवल एक कहानी नहीं है, बल्कि यह लेखक की संवेदनशील सोच और समाज की गहरी समझ का परिणाम है। ऐसी रचनाओं को कॉपीराइट द्वारा संरक्षित किया जाता है।

IPR की आवश्यकता क्यों है?

कल्पना कीजिए कि आपने वर्षों की मेहनत से कोई नया उत्पाद तैयार किया और बाजार में लाए। यदि कोई अन्य व्यक्ति आपकी अनुमति के बिना उसकी नकल कर ले और लाभ कमाने लगे, तो क्या यह न्यायसंगत होगा?

IPR इसी अन्याय को रोकने का माध्यम है। इसकी आवश्यकता इसलिए है क्योंकि—

1. रचनाकार को सम्मान और पहचान मिलती है।
2. आविष्कारक को आर्थिक लाभ मिलता है।
3. नवाचार को प्रोत्साहन मिलता है।
4. धोखाधड़ी से सुरक्षा मिलती है।

जब लोगों को यह विश्वास होता है कि उनके विचार सुरक्षित हैं, तो वे निडर होकर नए प्रयोग करते हैं। यही किसी भी देश की प्रगति की असली ताकत है।

बौद्धिक संपदा अधिकार के प्रमुख प्रकार

1. पेटेंट (Patent)

पेटेंट किसी नए और उपयोगी आविष्कार पर दिया जाने वाला विशेष अधिकार है। यह आविष्कारक को लगभग 20 वर्षों तक उस आविष्कार को बनाने, उपयोग करने और बेचने का अधिकार देता है।

मान लीजिए किसी वैज्ञानिक ने कैंसर की नई दवा खोजी। पेटेंट उसे यह सुनिश्चित करता है कि कोई अन्य कंपनी उसकी अनुमति के बिना उस दवा का उत्पादन नहीं कर सकती।

2. कॉपीराइट (Copyright)

कॉपीराइट साहित्य, संगीत, कला, फिल्म, नाटक और सॉफ्टवेयर जैसी रचनाओं पर लागू होता है। यह अधिकार रचना के निर्माण के साथ ही स्वतः मिल जाता है।

जब कोई गायक नया गीत गाता है या कोई निर्देशक फिल्म बनाता है, तो उस पर कॉपीराइट लागू होता है। इससे रचना की नकल या अवैध वितरण को रोका जा सकता है।

3. ट्रेडमार्क (Trademark)
ट्रेडमार्क किसी उत्पाद या सेवा की पहचान का प्रतीक होता है—जैसे नाम, लोगो या टैगलाइन। यह उपभोक्ताओं को असली और नकली उत्पाद में अंतर समझने में मदद करता है।

उदाहरण के लिए, Tata, Mahendra, Honda, Google, Microsoft, Yahoo, Puma या Amul का नाम सुनते ही हमारे मन में एक भरोसेमंद छवि बन जाती है। यही ट्रेडमार्क की शक्ति है।

4. औद्योगिक डिजाइन (Industrial Design)
किसी उत्पाद का आकर्षक आकार, पैटर्न या डिजाइन भी सुरक्षा के योग्य होता है। उदाहरण के लिए, मोबाइल फोन का अनोखा डिजाइन या किसी कार का विशेष बाहरी रूप।

5. भौगोलिक संकेत (Geographical Indication – GI)
कुछ उत्पाद अपनी गुणवत्ता और विशेषता के कारण किसी खास क्षेत्र से जुड़े होते हैं। GI टैग ऐसे उत्पादों को पहचान और कानूनी सुरक्षा देता है।

जैसे दार्जिलिंग की चाय, आगरा का पेठा, फिरोजाबाद की चूड़ियां, कोल्हापुरी चप्पल, मधुबनी पेंटिंग, वाराणसी साड़ी, कानी शाल, बीकानेरी भुजिया और मैसूर का रेशम अपने-अपने क्षेत्र के कारण प्रसिद्ध हैं।

भारत में IPR की स्थिति

भारत में बौद्धिक संपदा अधिकारों की सुरक्षा के लिए कई कानून बनाए गए हैं—

* पेटेंट अधिनियम, 1970
* कॉपीराइट अधिनियम, 1957
* ट्रेडमार्क अधिनियम, 1999
* भौगोलिक संकेत अधिनियम, 1999

विश्व व्यापार संगठन (WTO) जिसका कार्यालय जिनेवा में स्थित है। भारत उसका एक सदस्य है और अंतरराष्ट्रीय मानकों का पालन करता है। इससे भारतीय आविष्कारों और ब्रांडों को वैश्विक स्तर पर पहचान मिलती है।

भारत में इसके चार कार्यालय हैं दिल्ली, मुंबई,चेन्नई एवं कोलकाता जहां आप अपने क्षेत्र के अनुसार अपनी रचना, डिजाइन, लोगो एवं आविष्कार का पंजीकरण करा कर उन्हें सुरक्षित कर सकते है।

डिजिटल युग और IPR

आज इंटरनेट और सोशल मीडिया के दौर में सामग्री की चोरी बहुत आसान हो गई है। फिल्में, गाने और सॉफ्टवेयर कुछ ही मिनटों में अवैध रूप से साझा किए जा सकते हैं।

ऑनलाइन पायरेसी से कलाकारों और निर्माताओं को भारी नुकसान होता है। इसलिए डिजिटल राइट्स मैनेजमेंट (DRM) और साइबर कानूनों का महत्व बढ़ गया है।

अब तो छात्र भी अपने यूट्यूब चैनल, ब्लॉग या ऐप के माध्यम से कंटेंट बना रहे हैं। ऐसे में उन्हें भी IPR की जानकारी होना जरूरी है, ताकि वे अपनी मेहनत की रक्षा कर सकें।

IPR के लाभ

1. आर्थिक विकास में योगदान
2. रोजगार के अवसरों में वृद्धि
3. निवेश को आकर्षित करना
4. अंतरराष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा
5. रचनात्मकता और अनुसंधान को प्रोत्साहन

जब किसी देश में नवाचार सुरक्षित होता है, तो विदेशी कंपनियाँ भी निवेश करने के लिए प्रेरित होती हैं।

IPR से जुड़ी चुनौतियाँ

हालाँकि IPR के अनेक लाभ हैं, फिर भी कुछ समस्याएँ मौजूद हैं-

* जागरूकता की कमी
* पायरेसी और नकली उत्पाद
* कानूनी प्रक्रिया की जटिलता
* छोटे उद्यमियों के लिए उच्च लागत

कई बार ग्रामीण कारीगर या छोटे व्यवसायी अपने उत्पाद का GI या ट्रेडमार्क नहीं करा पाते, जिससे उन्हें उचित लाभ नहीं मिल पाता।

मानवीय दृष्टिकोण से IPR

IPR केवल कानून की बात नहीं है; यह इंसाफ और सम्मान की बात है। जब हम किसी की रचना को बिना अनुमति के कॉपी करते हैं, तो हम उसकी मेहनत का अनादर करते हैं।

एक छात्र का प्रोजेक्ट, एक कवि की कविता, एक वैज्ञानिक की खोज—इन सबमें समय, धैर्य और समर्पण छिपा होता है। IPR उस समर्पण की रक्षा करता है।

हमें यह समझना चाहिए कि जैसे हम अपनी मेहनत का सम्मान चाहते हैं, वैसे ही दूसरों की मेहनत का भी सम्मान करना हमारा कर्तव्य है।

निष्कर्ष

बौद्धिक संपदा अधिकार आधुनिक समाज की एक अनिवार्य आवश्यकता है। यह केवल कानूनी सुरक्षा नहीं, बल्कि रचनात्मकता और नवाचार की नींव है।

यदि हम एक प्रगतिशील और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करना चाहते हैं, तो हमें IPR के प्रति जागरूक होना होगा। रचनाकारों का सम्मान, नवाचार को प्रोत्साहन और कानूनों का सही पालन—ये तीनों मिलकर देश को ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था की ओर ले जा सकते हैं।

अंततः, IPR हमें यह सिखाता है कि विचार भी संपत्ति हैं—और हर संपत्ति की तरह उनकी भी सुरक्षा और सम्मान आवश्यक है।

प्रो० वाई के शर्मा

प्राचार्य
महायोगी गुरु गोरखनाथ राजकीय महाविद्यालय बिथ्याणी

उपलब्धियाँ

माह- दिसंबर 2025

दिनांक- 01 दिसम्बर 2025

विश्व एड्स दिवस के अवसर पर महाविद्यालय की एनएसएस इकाई,यूथ रेड क्रॉस इकाई एवं जंतु विज्ञान विभाग के संयुक्त तत्वावधान में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन।

दिनांक- 03 दिसम्बर 2025

महाविद्यालय की महिला उत्पीड़न निवारण समिति, लीगल एड सेल एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के संयुक तत्वावधान में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक- 04 दिसम्बर 2025

राजनीति विज्ञान विभाग के तत्वावधान में राष्ट्रीय युवा संसद कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक- 08 से 12 दिसम्बर 2025

आईक्यूएसी एवं वाणिज्य विभाग के संयुक्त तत्वावधान में विकसित भारत 2047 थीम पर पांच दिवसीय व्याख्यानमाला (हाइब्रिड मोड) कार्यक्रम का आयोजन

DEPARTMENT OF COMMERCE
DEGREE COLLEGE
आपका हार्दिक स्वागत
GPS Map Camera
Google
Garhkhet, Uttarakhand, India
M7v5+pfv, Garhkhet, Uttarakhand 263667, India
Lat 29.694513° Long 79.258874°
Wednesday, 10/12/2025 12:19 PM GMT +05:30

DEPARTMENT OF COMMERCE
GOVT. DEGREE COLLEGE
आपका हार्दिक स्वागत
GPS Map Camera
Garhkhet
Google
गढ़खेत, उत्तराखंड, भारत
M7v5+pfv, गढ़खेत, उत्तराखंड 263667, भारत
Lat 29.694582° Long 79.258816°
09/12/25 12:32 PM GMT +05:30

दिनांक- 11 से 12 दिसम्बर 2025

महाविद्यालय के छात्रों ने अंतर महाविद्यालय एथलेटिक्स प्रतियोगिता में जीते पदक

दिनांक- 09 से 11 दिसम्बर 2025

पाताल-भुवनेश्वर, बेरीनाग पिथौरागढ़ भूगोल शैक्षणिक भ्रमण

मन्दिर कमेटी पाताल भुवनेश्वर आपका
हार्दिक स्वागत करती है

दिनांक- 12 दिसम्बर 2025

एंटी रैगिंग जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक- 15 से 17 दिसम्बर 2025

विज्ञान विभाग के तत्वावधान में तीन दिवसीय ऑनलाइन व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन|

दिनांक- 17 दिसम्बर 2025

महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के तत्वावधान में स्पर्श गंगा दिवस के अवसर पर एक दिवसीय सामान्य शिविर का आयोजन

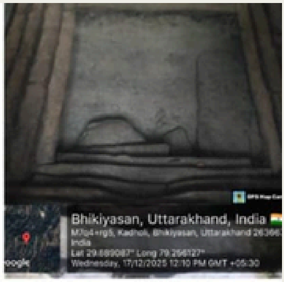

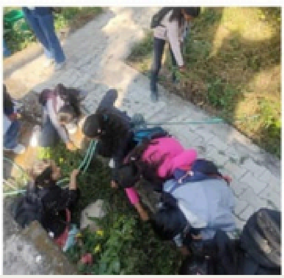

दिनांक- 24 दिसम्बर 2025

इतिहास विभाग और भौतिक विज्ञान विभाग के संयुक्त तत्वाधान में स्व. श्री इंद्रमणि बडोनी जयंती(लोक संस्कृति दिवस) का आयोजन

दिनांक- 05 जनवरी 2026

एंटी रैगिंग जागरूकता एवं परामर्श सत्र का आयोजन

दिनांक- 07 जनवरी 2026 से 12 जनवरी 2026

मेंटल हेल्थ क्लब एवं महिला उत्पीड़न निवारण समिति के संयुक तत्वावधान में स्ट्रेस मैनेजमेंट एंड इमोशनल रेजिलियंस इन यूथ एंड विमेन थीम पर पांच दिवसीय व्याख्यानमाला कार्यक्रम हाइब्रिड मोड में आयोजित।

'मैंटल हेल्थ क्लब' एवं 'महिला उत्पीड़न निवारण समिति'
डॉ० प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)
के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित
पाँच दिवसीय व्याख्यानमाला कार्यक्रम (हाईब्रिड मोड)
& Emotional Resilience in Youth and Women'
समय 12:00 Noon

दिनांक- 12 जनवरी 2026

महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के तत्वावधान में राष्ट्रीय युवा दिवस के उपलक्ष्य में एक दिवसीय सामान्य शिविर का आयोजन

दिनांक- 21 जनवरी 2026

महाविद्यालय की यूसीसी समिति के तत्वावधान में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन

सुर्ख़ियों में महाविद्यालय

छात्रों को साइबर अपराधों के प्रति किया सचेत

भिकियासैंण। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय में आयोजित पांच दिवसीय व्याख्यानमाला कार्यक्रम के तीसरे दिन इंफ्रास्ट्रक्चर, साइबर सुरक्षा और कनेक्टिविटि विषय पर चर्चा हुई। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण के वाणिज्य विभाग प्रभारी डा. गौरव कुमार रहे। उन्होंने पीपीटी के माध्यम से साइबर अटैक की नवीनतम तकनीकों के विषय में जानकारी देते हुए ऑनलाइन ठगी, ओटीपी फ्रॉड, बैंकिंग फ्रॉड, फिशिंग, मैलवेयर सोशल मीडिया क्राइम, फर्जी कॉल आदि पर विस्तारपूर्वक जानकारी दी। इस दौरान प्राध्यापकों और छात्रों ने जिज्ञासापूर्ण प्रश्न भी पूछे। प्रभारी प्राचार्य डा. साविर हुसैन ने साइबर अपराधों से बचने के लिए जागरूकता को सबसे बड़ा उपाय बताया। संचालन संयोजक डॉ. राजीव कुमार, आयोजक सचिव डॉ. दीपा लोहनी ने संयुक्त रूप से किया।

12:14 81%

Leave a Comment

डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में विश्व एड्स दिवस पर विविध कार्यक्रम हुए आयोजित।

भिकियासैंण (अल्मोड़ा)। विश्व एड्स दिवस के अवसर पर डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में एनएसएस इकाई, जंतु विज्ञान विभाग एवं यूथ रेड क्रॉस इकाई के संयुक्त तत्वावधान में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर एनएसएस इकाई द्वारा एक दिवसीय सामान्य शिविर आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के अंतर्गत महाविद्यालय परिसर से बासोट मार्ग तक जागरूकता रैली निकाली गई। इसके साथ ही "एचआईवी/एड्स जागरूकता में डिजिटल मीडिया की भूमिका" विषय पर भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में बीएससी पंचम सेमेस्टर की छात्रा रजना प्रथम, बीए तृतीय सेमेस्टर की छात्रा सिमरन गोस्वामी द्वितीय, तथा बीए पंचम सेमेस्टर की छात्रा खुशी रावत तृतीय स्थान पर रहीं।

जंतु विज्ञान विभाग द्वारा "जागरूकता का दीपक जलाओ, एड्स के अंधेरे को मिटाओ" विषय पर भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें बीएससी पंचम सेमेस्टर की छात्रा रंजना प्रथम, बीएससी पंचम सेमेस्टर की छात्रा गीतांजली द्वितीय, तथा बीए पंचम सेमेस्टर की छात्रा तनु अधिकारी तृतीय स्थान पर रहीं। विजेताओं को डॉ. दयाकृष्ण द्वारा सम्मानित किया गया।

वहीं यूथ रेड क्रॉस सोसाइटी द्वारा "विघटन पर काबू पाना, प्रतिक्रिया में परिवर्तन करना" विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें प्रथम स्थान हर्षिता पांडे (बीए तृतीय सेमेस्टर), द्वितीय स्थान पूजा बिष्ट (बीए तृतीय सेमेस्टर) और तृतीय स्थान दीपा नैनवाल (बीए तृतीय सेमेस्टर) ने प्राप्त किया।

कार्यक्रम महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना के मार्गदर्शन में तथा प्रभारी प्राचार्य डॉ. दिनेश कुमार की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। कार्यक्रम संचालन एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डॉ. सोनम, जंतु विज्ञान विभाग प्रभारी डॉ. दयाकृष्ण, तथा यूथ रेड क्रॉस प्रभारी डॉ. इला बिष्ट द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राध्यापक, कर्मचारी, एनएसएस स्वयंसेवी, यूथ रेड क्रॉस वॉलिंटियर्स और बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

Contact us

साइबर अपराध से बचने के तरीके बताए

भिकियासैंण (अल्मोड़ा)। राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में विकसित भारत 2047 पर पांच दिवसीय कार्यक्रम के तीसरे दिन साइबर सुरक्षा और कनेक्टिविटी विषय पर वक्ताओं ने विचार व्यक्त किए।

साइबर क्राइम हेल्पलाइन नंबर की दी जानकारी

मुख्य वक्ता वाणिज्य विभाग के प्रभारी डॉ. गौरव कुमार ने साइबर अपराध से बचने के तरीके बताए। ऑनलाइन ठगी, ओटीपी फ्रॉड, बैंकिंग फ्रॉड, फिशिंग, मैलवेयर सोशल मीडिया क्राइम, फर्जी कॉल सहित अनेक अपराधों के संबंध में जानकारी दी गई। प्रभारी प्राचार्य डॉ. साविर हुसैन ने नेशनल साइबर क्राइम हेल्पलाइन नंबर और साइबर अपराध होने पर रिपोर्ट करने के संबंध में ऑनलाइन पोर्टल के बारे में बताया।

मंच का संचालन डॉ. राजीव कुमार, डॉ. दीपा लोहनी ने किया। कार्यक्रम में डॉ. विश्वनाथ पांडे, डॉ. इला बिष्ट, डॉ. सोनम, डॉ. इंदिरा सहित छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। संवाद

न्यूज डायरी

छात्र-छात्राओं को दी रैगिंग के दुष्परिणामों की जानकारी

भिकियासैंण (अल्मोड़ा)। डॉ. प्रताप बिष्ट ने राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में प्राचार्य प्रो. शर्मिला सक्सेना के निर्देशन में एंटी-रैगिंग जागरूकता एवं परामर्श सत्र का आयोजन किया। कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं को रैगिंग के दुष्परिणामों और इसके कानूनी प्रावधानों के बारे में जानकारी दी गई। नोडल अधिकारी डॉ. कौशल कुमार ने परामर्श केंद्रित सत्र में रैगिंग से बचाव और मानसिक, भावनात्मक तथा शारीरिक प्रभावों पर चर्चा की। संवाद

22 जनवरी 2026 (उत्तरउजाला)

राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण बना निक्षय मित्र

भिकियासैंण। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम के अंतर्गत क्षय मुक्त भारत अभियान संचालित किया जा रहा है। जिसका उद्देश्य देश को क्षय रोग से मुक्त करना है। इस मुहिम को ध्यान में रखते हुए महाविद्यालय द्वारा एक महिला क्षय रोगी को गोद लिया गया है। जिसके अंतर्गत उन्हें मासिक पोषाहार किट वितरित कर क्षय रोग से लड़ने हेतु प्रेरित किया जायेगा। उक्त जानकारी महाविद्यालय की यूथ रेड क्रॉस प्रभारी डॉ. इला बिष्ट ने दी।

मानसिक स्वास्थ्य व महिला अधिकारों पर दिए व्याख्यान

भिकियासैंण। राजकीय महाविद्यालय में मेंटल हेल्थ क्लब और महिला उत्पीड़न निवारण समिति के संयुक्त तत्वावधान में स्ट्रेस मैनेजमेंट एंड इमोशनल रेजिलियंस इन यूथ एंड विमेन विषय पर पांच दिवसीय व्याख्यानमाला का समापन हुआ। आयोजन महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. शर्मिला सक्सेना की अध्यक्षता और मार्गदर्शन में किया गया। महाविद्यालय की समाजशास्त्र विभाग प्रभारी डा. इला बिष्ट ने सोशल एंजाइटी इन साइबर स्पेस विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने डिजिटल प्लेटफॉर्म के बढ़ते प्रभाव और मानसिक स्वास्थ्य पर इसके नकारात्मक प्रभावों पर विस्तृत चर्चा की।

डा. बिष्ट ने बताया कि कैसे साइबर स्पेस में दूसरों द्वारा आंके जाने का डर, हमारे वास्तविक जीवन के आत्मविश्वास को प्रभावित कर रहा है। इसके साथ ही, उन्होंने सोशल मीडिया और डिजिटल तुलना के दबाव से निपटने के लिए व्यवहारिक रणनीतियां भी साझा की। वहीं, एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी और वनस्पति विज्ञान विभाग प्रभारी डा. सोनम ने मानसिक स्वास्थ्य और महिला अधिकारों का अनदेखा पहलू पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम संयोजक डा. दीपा लोहनी ने पांच दिवसीय व्याख्यानमाला की आख्या प्रस्तुत की।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता शिक्षाविद् कुबेर सिंह कड़ाकोटी, डा. स्वाति दीक्षित, डा. शिवांगी दीक्षित, स्वास्थ्य परामर्शदाता अराधना श्रीवास्तव, समाजशास्त्र विभाग प्रभारी डा. इला बिष्ट और एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी व वनस्पति विज्ञान विभाग प्रभारी डा. सोनम शामिल रहे। कार्यक्रम में स्थानीय महिलाएं, महाविद्यालय स्टॉफ और छात्र-छात्राओं ने ऑनलाइन और ऑफलाइन माध्यमों से प्रतिभाग किया।

dainikshubharambhnews.com

शिक्षा / Leave a Comment

डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में 'विकसित भारत 2047' विषय पर पाँच दिवसीय व्याख्यानमाला कार्यक्रम का हुआ शुभारंभ।

भिकियासैंण (अल्मोड़ा)। डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में महाविद्यालय के आईक्यूएसी एवं वाणिज्य विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 'विकसित भारत 2047' विषय पर पाँच दिवसीय व्याख्यानमाला कार्यक्रम का शुभारंभ हो गया है। कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया गया।

इसके बाद कार्यक्रम संयोजक डॉ. राजीव कुमार ने व्याख्यानमाला की रुपरेखा एवं उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। व्याख्यानमाला के प्रथम दिन मुख्य वक्ता के रुप में अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन भिकियासैंण के ब्लॉक समन्वयक अभिषेक कुमार उपस्थित रहे।

उन्होंने हमारे जीवन में संविधान का महत्व विषय पर पीपीटी के माध्यम से अत्यंत सरल व रोचक तरीके से छात्रों को संबोधित किया तथा संविधान पर आधारित क्विज का भी आयोजन किया, जिसमें छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया।

मुख्य वक्ता ने कहा कि स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण पर विशेष ध्यान देने से विकसित भारत 2047 की संकल्पना को साकार किया जा सकता है।

कार्यक्रम महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। उन्होंने पाँच दिवसीय व्याख्यानमाला के सफल आयोजन के लिए शुभकामनाएँ दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रभारी प्राचार्य डॉ. साबिर हुसैन ने की।

डॉ. हुसैन ने कहा कि देश के शिक्षित होने और अस्पृश्यता से मुक्त होने पर ही विकसित भारत का स्वप्न साकार हो सकता है।

कार्यक्रम का संचालन संयोजक डॉ. राजीव कुमार एवं आयोजक सचिव डॉ. दीपा लोहनी ने संयुक्त रुप से तकनीकी संयोजक की भूमिका डॉ. परितोष ने निभाई।

Contact us

यूसीसी निबंध प्रतियोगिता में खुशी प्रथम

भिकियासैंण। राजकीय महाविद्यालय में यूसीसी समिति के तत्वाधान में समान नागरिक संहिता-कानून पर एक निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। यह प्रतियोगिता महाविद्यालय के यूसीसी नोडल अधिकारी डा. विश्वनाथ पांडे और डा. दिनेश कुमार की देखरेख में संपन्न हुई। प्रतियोगिता में बीए पंचम सेमेस्टर की छात्रा खुशी रावत ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि बीए तृतीय सेमेस्टर की हर्षिता ने द्वितीय और बीए पंचम सेमेस्टर की निशा बिष्ट ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका डा. इला बिष्ट, डा. दीपा लोहनी और डा. राजीव कुमार ने निभाई। प्रतियोगिता में महाविद्यालय के सभी प्राध्यापकों और कर्मचारियों ने काफी सहयोग दिया, जिसके चलते यह आयोजन सफल रहा। विजयी प्रतिभागियों को महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. शर्मिला सक्सेना ने शुभकामनाएं दी।

23 जनवरी 2026 (उत्तरउजाला)

न्यूज डायरी

डिजिटल प्लेटफॉर्म के बढ़ते प्रभाव पर चर्चा

भिकियासैंण (अल्मोड़ा)। राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में स्ट्रेस मैनेजमेंट एंड इमोशनल रेजिलियंस इन यूथ एंड विमेन विषय पर व्याख्यान कार्यक्रम का समापन हो गया है। पांच दिवसीय कार्यक्रम के अंतिम दिन दो वक्ताओं ने अलग-अलग विषयों पर व्याख्यान दिए। समाजशास्त्र विभाग के प्रभारी डॉ. इला बिष्ट ने डिजिटल प्लेटफॉर्म के बढ़ते प्रभाव के संबंध में चर्चा की। कहा कि डिजिटल प्लेटफॉर्म का प्रभाव गहरा और बहुआयामी है। जो शिक्षा, संचार, व्यवसाय और सामाजिक जीवन को बदल रहा है। वहीं, वनस्पति विज्ञान विभाग प्रभारी डॉ. सोनम ने मानसिक स्वास्थ्य विषय पर कहा कि मानसिक शांति मनुष्य को सशक्त बनाती है। व्याख्यान कार्यक्रम में महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना, डॉ. दीपा लोहनी सहित अन्य लोग मौजूद रहे। संवाद

पांच दिवसीय व्याख्यानमाला का शुभारंभ

भिकियासैंण (अल्मोड़ा)। राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में विकसित भारत 2047 विषय पर पांच दिवसीय व्याख्यानमाला कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रभारी प्राचार्य डॉ. साबिर हुसैन ने की। सोमवार को छात्र-छात्राओं को अभिषेक कुमार ने हमारे जीवन में संविधान के महत्व को बताते हुए स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण की जानकारी दी। इस मौके पर डॉ. राजीव कुमार, डॉ. दीपा लोहनी, डॉ. परितोष, डॉ. विश्वनाथ पांडे, डॉ. सोनम, डॉ. इंदिरा, अजय पांडे, योगेश भट्ट आदि रहे। संवाद

अमर उजाला, दिनांक 05.12.2025

युवा संसद में विपक्ष ने सत्ता पक्ष पर उठाए सवाल

भिकियासैंण (अल्मोड़ा)। भिकियासैंण महाविद्यालय में युवा संसद का आयोजन हुआ। बृहस्पतिवार को युवा संसद में लोकसभा अध्यक्ष की भूमिका गीताजंली, प्रधानमंत्री की तनु अधिकारी, गृह मंत्री की दीपा नैलवाल, वित्त मंत्री की खुशी रावत, रक्षा मंत्री की रंजना, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री की प्रियंका जोशी, और विदेश मंत्री की भूमिका निशा बिष्ट ने निभाई।

निशा रावत विपक्ष के नेता की भूमिका में रहीं। प्रश्नकाल के दौरान विपक्ष के नेताओं ने सत्ता पक्ष से विभिन्न मुद्दों पर अहम सवाल किए। सत्ता पक्ष ने बारी-बारी से उनके सवालों के जवाब दिए। युवा संसद में मार्शल की भूमिका में मीनाक्षी और महासचिव के रूप में सुषमा मौजूद रहीं।

वहां प्रभारी प्राचार्य, डॉ. साविर हुसैन, प्रो. शर्मिला सक्सेना, डॉ. दिनेश कुमार, डॉ. दीपा लोहनी सहित छात्र- छात्राएं मौजूद रहे। संवाद

महाविद्यालय में युवा संसद में मौजूद छात्र-छात्राएं। स्रोत- महाविद्यालय

विकसित भारत पर पांच दिवसीय व्याख्यानमाला का समापन

भिकियासैंण। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय में आईक्यूएसी और वाणिज्य विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित पांच दिवसीय व्याख्यानमाला कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती मां की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम विकसित भारत 2047 के अंतर्गत आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य 2047 तक भारत के विकास की दिशा में महत्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा करना था। कार्यक्रम का संचालन महाविद्यालय के संयोजक डा. राजीव कुमार और आयोजक सचिव डा. दीपा लोहनी द्वारा संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम के समापन पर, संयोजक डा. राजीव कुमार ने व्याख्यानमाला की आख्या प्रस्तुत की और सभी का धन्यवाद किया। प्रभारी प्राचार्य डा. साबिर हुसैन और महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना ने कार्यक्रम को अत्यधिक ज्ञानवर्धक और उपयोगी बताया।

डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में विकसित भारत 2047 के अंतर्गत आयोजित पांच दिवसीय व्याख्यानमाला कार्यक्रम के दूसरे दिन कृषि और ग्रामीण विकास पर हुई चर्चा

भिकियासैंण। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में महाविद्यालय के आईक्यूएसी एवं वाणिज्य विभाग के संयुक्त तत्वावधान में विकसित भारत 2047 के अंतर्गत पांच दिवसीय व्याख्यानमाला कार्यक्रम के दूसरे दिन कृषि और ग्रामीण विकास विषय पर व्याख्यान दिया गया। उक्त व्याख्यान कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में सहायक कृषि अधिकारी आशीष रिखाड़ी कृषि विभाग भिकियासैंण ने कृषि और ग्रामीण समाज विषय पर व्याख्यान देते हुए कहा कि कृषि ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब किसान सशक्त हो पाएगा तभी भारत विकसित हो पायेगा।उन्होंने श्रोताओं को कृषि से जुड़े विभिन्न उपकरणों,तकनीकी और उत्तराखंड सरकार व केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना,किसान सम्मान निधि योजना,किसान क्रेडिट कार्ड योजना,किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने हेतु परंपरागत कृषि विकास योजना, जियो लाइन टैंक स्कीम, चेक डैम आदि के विषय में पीपीटी के माध्यम से जानकारी प्रदान की।कार्यक्रम महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना के मार्गदर्शन में प्रभारी प्राचार्य डॉ. साबिर हुसैन की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। संचालन संयोजक डॉ. राजीव कुमार, आयोजक सचिव डॉ. दीपा लोहनी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।कार्यक्रम में पुष्कर सिंह फर्त्याल,सहायक कृषि अधिकारी, डॉ. विश्वनाथ पांडे, डॉ. गौरव,डॉ. सोनम, डॉ. इंदिरा, योगेश भट्ट सहित समस्त महाविद्यालय स्टॉफ व छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

डॉ.प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण द्वारा क्षय मुक्त भारत हेतु अपना योगदान सुनिश्चित करने का लिया गया संकल्प

वीएनसी मीडिया 2 जनवरी 2026
उत्तराखंड : डॉ एसआर चंद्रा

NEWS
नयी दुनिया। नए समाचार।
VNC MEDIA
CHANDIGARH

भिकियासैण। भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम के अंतर्गत क्षय मुक्त भारत अभियान संचालित किया जा रहा है,जिसका उद्देश्य देश को क्षय रोग से मुक्त करना है।इस अभियान की सफलता हेतु डा.डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण द्वारा क्षय मुक्त भारत हेतु अपना योगदान सुनिश्चित करने का संकल्प लिया है।भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम के अंतर्गत क्षय मुक्त भारत अभियान संचालित किया जा रहा है,जिसका उद्देश्य देश को क्षय रोग से मुक्त करना है।इस अभियान की सफलता हेतु राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण द्वारा विगत दिवस 07 सदस्यीय एक समिति का गठन किया गया है, जिसका उद्देश्य क्षय मुक्त भारत हेतु महाविद्यालय का योगदान सुनिश्चित करना है।उक्त जानकारी महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना ने दी।

तनाव प्रबंधन पर पांच दिवसीय व्याख्यानमाला शुरू

भिकियासैंण। हेल्थ क्लब एवं महिला उत्पीड़न निवारण समिति व डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण के संयुक्त तत्वावधान में स्ट्रेस मैनेजमेंट एंड इमोशनल रेजिलियंस इन यूथ एंड विमेन विषय पर आयोजित पांच दिवसीय व्याख्यानमाला का शुभारंभ बुधवार को हुआ। कार्यक्रम का आयोजन महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. शर्मिला सक्सेना की अध्यक्षता एवं मार्गदर्शन में हाइब्रिड मोड में किया जा रहा है। प्राचार्य प्रो. सक्सेना ने व्याख्यानमाला के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वर्तमान समय में युवाओं और महिलाओं में बढ़ते तनाव व मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को देखते हुए ऐसे कार्यक्रम अत्यंत आवश्यक हैं। कार्यक्रम संयोजक एवं आयोजन सचिव डा. दीपा लोहनी ने पांच दिवसीय व्याख्यानमाला की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए बताया कि इसका मुख्य उद्देश्य युवाओं, महिलाओं, महाविद्यालय परिवार एवं स्थानीय समुदाय को तनाव प्रबंधन और मानसिक सशक्तिकरण के प्रति जागरूक करना है।

स्वयंसेवियों ने चलाया स्वच्छता अभियान

भिकियासैंण। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वाधान में एक दिवसीय सामान्य शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रभारी प्राचार्य डॉ. साबिर हुसैन की अध्यक्षता में राष्ट्रीय सेवा योजना लक्ष्य गीत गायन से किया गया। तत्पश्चात स्वयं सेवियों ने महाविद्यालय परिसर में स्वच्छता अभियान चलाया, जिसके अंतर्गत स्वयंसेवियों ने घास, झाड़ियों का उन्मूलन कर महाविद्यालय के परिसर मे सौंदर्यकरण का कार्य किया। इस अवसर पर राष्ट्रीयं सेवा योजना प्रभारी डा. सोनम ने स्वयंसेवियों को स्वच्छता का महत्व बताते हुए पर्यावरण संरक्षण हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम में डा. विश्वनाथ पांडे, डा. गौरव, डा. इला बिष्ट, डा. दीपा लोहनी, डा. इंदिरा, पूरन जलाल आदि उपस्थित रहे।

मानसिक स्वास्थ्य विषय पर दिया व्याख्यान

भिकियासैंण (अल्मोड़ा)। राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में व्याख्यान माला कार्यक्रम में स्ट्रेस मैनेजमेंट एंड इमोशनल रेजिलियंस इन यूथ एंड विमेन विषय पर व्याख्यान दिया। शुक्रवार को मुख्य वक्ता डॉ. शिवांगी दीक्षित ने खुशहाल और स्वस्थ जीवन के लिए मानसिक स्वास्थ्य विषय की जानकारी दी। उन्होंने तनाव के लक्षणों और प्रबंधन पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। कहा मानसिक समस्याओं को छुपाने के बजाय उन पर खुलकर बात करनी चाहिए। कार्यक्रम महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना की अध्यक्षता में आयोजित हुई। संचालन डॉ. दीपा लोहनी ने किया। संवाद

आध्यात्म से जुड़कर तनाव से पा सकते हैं निजात : डॉ. श्वेता

भिकियासैंण (अल्मोड़ा)। राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में व्याख्यानमाला कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बृहस्पतिवार को स्ट्रेस मैनेजमेंट एंड इमोशनल रेजिलियंस इन यूथ एंड विमेन विषय पर व्याख्यान दिए गए। डॉ. श्वेता ने बताया कि लोग नियमित योग, ध्यान और आध्यात्म से जुड़कर तनाव से निजात पा सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन डॉ. दीपा लोहनी ने किया। संवाद

अमर उजाला, 13/12/2025

हर क्षेत्र के व्यक्ति को मुख्यधारा में लाना जरूरी : रेखा

भिकियासैंण (अल्मोड़ा)। राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में विकसित भारत 2047 विषय पर पांच दिवसीय व्याख्यानमाला कार्यक्रम का समापन हो गया है। शुक्रवार को अंग्रेजी विभाग के प्राध्यापक डॉ. कौशल कुमार ने विकसित भारत 2047 मिशन विषय पर जानकारी देते हुए कहा कि विकसित भारत के लिए हमें अनेक चुनौतियों से निपटना होगा। हिंदी विभाग प्रभारी डॉ. गार्गी लोहनी ने शिक्षा, कौशल और नवाचार पर प्रकाश डाला। राजनीति विज्ञान की सहायक प्राध्यापक डॉ. रेखा ने सामाजिक अवधारणा और सामाजिक न्याय विषय की अवधारणा को समझाया। उन्होंने कहा कि हर वर्ग, हर लिंग, हर क्षेत्र के व्यक्ति को मुख्यधारा में लाना होगा। इसके बाद ही विकसित भारत का संकल्प पूरा किया जा सकेगा। कार्यक्रम प्रभारी प्राचार्य डॉ. साबिर हुसैन की अध्यक्षता में आयोजित हुए। वहां डॉ. राजीव कुमार, डॉ. विश्वनाथ पांड़े, डॉ. गौरव कुमार, डॉ. इला, डॉ. दिनेश कुमार, डॉ. सोनम, डॉ. इंदिरा, शेर सिंह, महेश चंद्र, गौरव कुमार मौजूद रहे। संवाद

विकसित भारत पर पांच दिवसीय व्याख्यान शुरू

भिकियासैंण। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय में आईक्यूएसी एवं वाणिज्य विभाग के संयुक्त तत्वावधान में विकसित भारत 2047 पर पांच दिवसीय व्याख्यानमाला कार्यक्रम प्रारंभ हो गया है। कार्यक्रम संयोजक डा. राजीव कुमार ने पांच दिवसीय व्याख्यान कार्यक्रम की रूपरेखा और उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। प्रथम दिन मुख्य वक्ता के रूप में अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के ब्लॉक समन्वयक अभिषेक कुमार ने संविधान का महत्व विषय पर छात्र-छात्राओं को अवगत कराया।

मुख्य वक्ता ने कहा कि हमें स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान देना चाहिए, जिससे विकसित भारत 2047 की संकल्पना को साकार करने में मदद मिलेगी। प्राचार्य प्रो. शर्मिला ने पांच दिवसीय व्याख्यान कार्यक्रम के आयोजन को शुभकामनाएं दीं। अध्यक्षता प्रभारी प्राचार्य डा. साबिर हुसैन ने की। संचालन संयोजक डा. राजीव कुमार, आयोजक सचिव डा. दीपा लोहनी ने किया। तकनीकी संयोजक की भूमिका डा. परितोष ने निभाई। इस दौरान डा. विश्वनाथ पांडे, डा. सोनम, डा. इंदिरा, अजय पांडे, योगेश भट्ट आदि रहे।

अमर उजाला

16-12-2025

तीन दिवसीय व्याख्यानमाला कार्यक्रम का हुआ शुभारंभ

भिकियासैंण (अल्मोड़ा)। राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में सस्टेनेबल टेक्नोलॉजिकल और नवाचार विषय पर तीन दिवसीय व्याख्यानमाला कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य प्रो. शर्मीला सक्सेना ने किया। संयोजक डॉ. इंदिरा ने तीन दिवसीय व्याख्यानमाला कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। प्रथम दिन मुख्य वक्ता डॉ. पुष्पेंद्र सेमवाल ने पीपीटी के माध्यम से रोल ऑफ मैथमेटिक्स इन डिजाइनिंग सस्टेनेबल एनर्जी सिस्टम के बारे में बताया। कहा कि गणित सतत ऊर्जा प्रणाली की रीढ़ है जो एक नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत मॉडलिंग और प्रबंधन के लिए आवश्यक है। इससे मशीन दक्षता बढ़ती है। कार्बन उत्सर्जन कम होता है। यह ऊर्जा प्रवाह को समझने, ऊर्जा खपत की भविष्यवाणी करने के लिए गणित के मॉडल का उपयोग करता है। कार्यक्रम का संचालन संयोजक डॉ. इंदिरा ने किया। संवाद

उत्तर उजाला

18/12/2025

स्वयंसेवियों ने लिया पर्यावरण संरक्षण का संकल्प

भिकियासैंण। डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में स्पर्श गंगा दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के तत्वावधान में एक दिवसीय सामान्य शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रभारी प्राचार्य डॉ. साबिर हुसैन की अध्यक्षता में एनएसएस के लक्ष्य गीत के सामूहिक गायन के साथ हुआ। एसएसपी प्रभारी डॉ. सोनम ने स्वयंसेवियों को स्पर्श गंगा अभियान के उद्देश्य और महत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इसके बाद स्वयंसेवियों ने रामगंगा नदी के आसपास व्यापक स्वच्छता अभियान चलाया। स्वयंसेवियों ने गांव के आसपास स्थित प्राकृतिक नालों और पर्यावरण को स्वच्छ एवं संरक्षित रखने का संकल्प लिया। इस अवसर पर डॉ. दिनेश कुमार ने स्वयंसेवियों को स्वच्छता के महत्व से अवगत कराते हुए पर्यावरण संरक्षण के लिए निरंतर प्रयास करने का आह्वान किया। कार्यक्रम में डॉ. गौरव, डॉ. इला बिष्ट, डॉ. इंदिरा, पूरन जलाल सहित महाविद्यालय का समस्त कर्मचारी वर्ग एवं एनएसएस स्वयंसेवी उपस्थित रहे।

उत्तरउजाला

विमेन थीम पर पांच दिवसीय व्याख्यानमाला जारी

भिकियासैंण। हेल्थ क्लब एवं महिला उत्पीड़न निवारण समिति, राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण के संयुक्त तत्वावधान में स्ट्रेस मैनेजमेंट एंड इमोशनल रेजिलियंस इन यूथ एंड विमेन विषय पर पांच दिवसीय व्याख्यानमाला दूसरे दिन भी जारी रही। महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. शर्मिला सक्सेना की अध्यक्षता एवं दिशा निर्देशन में हाइब्रिड मोड में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य वर्तमान समय में युवाओं और महिलाओं को बढ़ते तनाव एवं मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान हेतु जागरूक करना है। दूसरे दिन मुख्य वक्ता डा. श्वेता दीक्षित क्लस्टर प्रोग्राम मैनेजर व पोषण एवं स्वास्थ्य परामर्शदाता सीएमओ कार्यालय ऊधम सिंह नगर ने कॉमन हेल्थ प्रॉब्लम्स एंड स्ट्रेस मैनेजमेंट टेक्नीक्स फॉर स्ट्रेस फ्री लाइफ विषय पर व्याख्यान दिया। मुख्य वक्ता ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि स्वस्थ मन स्वस्थ समाज की नींव है। उन्होंने प्रतिभागियों से मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने की बात कही। उन्होंने महिला स्वास्थ्य पर भी चर्चा की और बताया कि हम स्वयं की देखभाल करें योग, ध्यान और आध्यात्मिकता से जुड़कर हम तनाव से निजात पा सकते हैं। इस दौरान प्रतिभागियों हेतु समस्या समाधान सत्र भी आयोजित किया गया। जिनका समाधान डा. दीक्षित ने किया और उनके द्वारा महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए गए। कार्यक्रम का संयोजक एवं आयोजन सचिव डा. दीपा लोहनी ने किया। संचालन में कार्यक्रम सह-सचिव डा. दयाकृष्ण एवं आयोजन समिति का विशेष योगदान रहा। इस दौरान राजकीय महाविद्यालय पोखरी क्वीली टिहरी गढ़वाल की प्राचार्य प्रो. शशिबाला वर्मा आदि ने ऑनलाइन माध्यम से कार्यक्रम में प्रतिभाग किया।

हमारी चौपाल

कुमाऊं

डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में स्व. श्री इंद्रमणि बडोनी जयंती के तहत विभिन्न गतिविधियों का आयोजन

भिकियासैंण (आरएनएस)। डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में इतिहास विभाग एवं भौतिक विज्ञान विभाग के तत्वावधान में स्व. श्री इंद्रमणि बडोनी की जयंती पर विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्व. बडोनी का भावपूर्ण स्मरण किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डॉ. साबिर हुसैन ने स्व. बडोनी जी के चित्र पर माल्यार्पण कर किया। इसी क्रम में महाविद्यालय के प्राध्यापकों एवं छात्रों ने स्व. बडोनी जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि अर्पित की।तत्पश्चात बीए प्रथम सेमेस्टर की छात्रा पूजा आर्या एवं पायल आर्या द्वारा उत्तराखंडी लोक गीत की सुंदर प्रस्तुति दी गई। बीए प्रथम सेमेस्टर की छात्रा साक्षी नेगी ने कविता पाठ के द्वारा 'उत्तराखंड के गांधी के जीवन की झांकी प्रस्तुत की। इस अवसर पर कार्तिक कुमार,हर्षिता,हेमा और ललिता आदि छात्र-छात्राओं द्वारा स्व. बडोनी जी के आकर्षक चित्र भी बनाए गए,

जिन्हें खूब सराहा गया। प्रभारी प्राचार्य डॉ. साबिर हुसैन ने बडोनी जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए छात्र- छात्राओं को उनके आदर्शों पर चलने के लिए प्रेरित किया। इतिहास विभाग प्रभारी डॉ. दीपा लोहनी ने स्व. बडोनी जी के जीवन वृतांत पर प्रकाश डाला और कहा कि वे उत्तराखंड राज्य आंदोलन के प्रणेता थे, जिन्होंने राज्य प्राप्ति के लिए आजीवन संघर्ष किया। भौतिक विज्ञान विभाग प्रभारी डॉ. इंदिरा ने उत्तराखंड राज्य निर्माण में उनके योगदान पर विचार रखे।कार्यक्रम का संचालन इतिहास विभाग प्रभारी डॉ. दीपा लोहनी और भौतिक विज्ञान विभाग प्रभारी डॉ. इंदिरा द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राध्यापक, शिक्षणेतर कर्मचारी वर्ग, छात्र संघ पदाधिकारी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

विमेन थीम के अंतर्गत पांच दिवसीय व्याख्यानमाला कार्यक्रम तृतीय दिन भी रहा जारी

वीएनसी मीडिया 9 जनवरी 2026
उत्तराखंड : डॉ एसआर चंद्रा

NEWS
नयी दुनिया। नए समाचार।
VNC MEDIA
CHANDIGARH

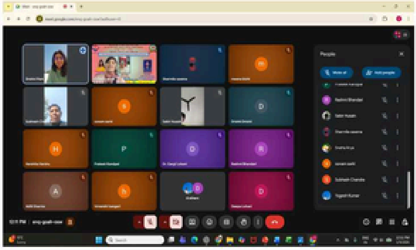

भिकियासैंण। हेल्थ क्लब एवं महिला उत्पीड़न निवारण समिति डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण के संयुक्त तत्वावधान में *स्ट्रेस मैनेजमेंट एंड इमोशनल रेजिलियंस इन यूथ एंड विमेन विषय पर पांच दिवसीय व्याख्यानमाला कार्यक्रम तीसरे दिन भी जारी रहा।कार्यक्रम महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना की अध्यक्षता एवं दिशा निर्देशन में हाइब्रिड मोड में आयोजित किया गया।कार्यक्रम का उद्देश्य वर्तमान समय में युवाओं और महिलाओं को बढ़ते तनाव एवं मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान हेतु जागरूक करना है। उक्त व्याख्यानमाला कार्यक्रम के तृतीय दिन मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. शिवांगी दीक्षित स्ट्रेस मैनेजमेंट थेरेपिस्ट एवं होम्योपैथिक चिकित्सा अधिकारी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भतरौंजखान ऑनलाइन माध्यम से उपस्थित रहीं। उन्होंने खुशहाल और स्वस्थ जीवन के लिए मानसिक स्वास्थ्य विषय पर व्याख्यान दिया। मुख्य वक्ता ने महिलाओं और युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य को लेकर चर्चा की और तनाव के लक्षणों और प्रबंधन पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला।उन्होंने तनाव को डायबिटीज,उच्च और निम्न रक्तचाप आदि बीमारियों का कारण बताया। साथ ही तनाव को दूर करने के लिए प्रतिभागियों को अभ्यास भी बताए। साथ ही डॉ. शिवांगी ने कहा कि मानसिक समस्याओं को छुपाने के बजाय उन पर खुलकर बात करना पहला समाधान है।उन्होंने महिला स्वास्थ्य से जुड़े पहलुओं पर भी चर्चा की और मार्गदर्शन किया। इस दौरान प्रतिभागियों हेतु समस्या समाधान सत्र भी आयोजित किया गया। जिनका समाधान डॉ. दीक्षित द्वारा किया गया, और उनके द्वारा महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए गए। कार्यक्रम का संचालन संयोजक एवं आयोजन सचिव डॉ. दीपा लोहनी द्वारा किया गया।कार्यक्रम के सफल संचालन में कार्यक्रम सह-सचिव डॉ. दयाकृष्ण एवं आयोजन समिति का योगदान रहा।इस दौरान अन्यत्र महाविद्यालय के प्राध्यापकों, स्थानीय महिलाओं,स्थानीय लोगों सहित समस्त महाविद्यालय स्टॉफ एवं छात्र छात्राओं ने उक्त व्याख्यान सत्र का लाभ उठाया।

राजकीय महाविद्यालय के छात्रों ने अंतर महाविद्यालय खेल प्रतियोगिता में जीते पदक

भिकियासैंण। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैण के छात्रों ने अंतर महाविद्यालय एथलेटिक्स प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए कांस्य और रजत पदक जीते है। इससे महाविद्यालय का नाम रोशन हुआ है।

प्रतियोगिता मे संजय गोस्वामी बीए पांचवें सेमेस्टर ने जैवलिन थ्रो स्पर्धा में तृतीय स्थान प्राप्त कर कांस्य पदक जीता। वही

महाविद्यालय की रिले टीम ने दूसरा स्थान हासिल कर रजत पदक पर कब्जा जमाया। टीम के सदस्यो मे योगेश बिष्ट बीए पांचवें सेमेस्टर, नितिन बिष्ट बीएससी पांचवें सेमेस्टर, त्रिभुवन दुर्गापाल बीए पांचवें सेमेस्टर, हिमांशु जीना बीकॉम पांचवें सेमेस्टर शामिल रहे।

महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. शर्मिला सक्सेना ने विजेता छात्रों को बधाई दी। प्रभारी प्राचार्य डा. साबिर हुसैन ने कहा कि खेलों में छात्रों की भागीदारी से उनका सर्वांगीण विकास होता है। खेल प्रभारी डॉ. राजीव कुमार ने भी छात्रों की इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त की, और आगे भी बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद जताई। और कहा कि यह उपलब्धि महाविद्यालय के छात्रों के लिए प्रेरणादायक है, और खेल गतिविधियों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण साबित होगी।

मीमांसा

पुस्तक के अध्ययन के दौरान यह स्पष्ट रूप से अनुभव होता है कि लेखक ने भारतीय दर्शन को केवल शास्त्रीय विषय के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास नहीं किया, बल्कि उसे मानव जीवन की वास्तविक समस्याओं और आंतरिक संघर्षों से भी जोड़ा है। प्रत्येक दर्शन की व्याख्या करते समय यह बताया गया है कि मनुष्य अपने जीवन में तर्क, ज्ञान, कर्म, साधना और आत्मचिंतन के माध्यम से किस प्रकार संतुलन प्राप्त कर सकता है। यही कारण है कि पुस्तक केवल दार्शनिक चर्चा तक सीमित नहीं रहती, बल्कि पाठक के भीतर एक गंभीर वैचारिक यात्रा आरंभ कर देती है।

न्याय दर्शन के अध्याय में तर्क और प्रमाण की जो विस्तृत चर्चा की गई है, वह विशेष रूप से प्रभावशाली लगती है। लेखक ने यह समझाने का प्रयास किया है कि सत्य तक पहुँचने के लिए केवल आस्था ही पर्याप्त नहीं, बल्कि विवेक और उचित विचार भी आवश्यक हैं। वहीं वैशेषिक दर्शन में पदार्थ, गुण और प्रकृति के विभिन्न तत्वों का जो विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है, वह भारतीय चिंतन की वैज्ञानिक दृष्टि को सामने लाता है। यह देखकर आश्चर्य होता है कि प्राचीन भारतीय मनीषियों ने हजारों वर्ष पहले ही संसार और पदार्थ की संरचना पर इतना गहन चिंतन किया था।

मीमांसा दर्शन से संबंधित भाग पुस्तक का एक गंभीर और चिंतनशील पक्ष प्रस्तुत करता है। इसमें कर्म, कर्तव्य और वैदिक परंपराओं की महत्ता को विस्तार से समझाया गया है। लेखक यह संकेत देते हैं कि

जीवन में केवल ज्ञान ही नहीं, बल्कि अनुशासित कर्म भी उतना ही आवश्यक है। दूसरी ओर वेदांत दर्शन के अध्यायों में आत्मा और ब्रह्म की एकता पर जो विवेचन मिलता है, वह पाठक को आध्यात्मिक स्तर पर गहराई से प्रभावित करता है। कई स्थानों पर ऐसा लगता है मानो लेखक केवल जानकारी नहीं दे रहे, बल्कि पाठक को आत्मबोध की ओर प्रेरित कर रहे हों।

पुस्तक की एक और महत्वपूर्ण विशेषता इसकी संतुलित दृष्टि है। लेखक ने किसी एक दर्शन को सर्वोच्च सिद्ध करने का प्रयास नहीं किया, बल्कि सभी दर्शनों की अपनी-अपनी उपयोगिता और विशेषताओं को सम्मानपूर्वक प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि पाठक को भारतीय दर्शन की समग्रता का अनुभव होता है। भाषा गंभीर होते हुए भी प्रवाहपूर्ण है और विषय की गहराई बनाए रखती है।

समग्र रूप से कहा जा सकता है कि “षड्दर्शनम्” केवल दर्शनशास्त्र की पुस्तक नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा का एक सजीव परिचय है। यह पुस्तक पाठक को सोचने, प्रश्न करने और आत्मचिंतन करने के लिए प्रेरित करती है। भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और दर्शन में रुचि रखने वाले प्रत्येक गंभीर पाठक के लिए यह एक अत्यंत उपयोगी और संग्रहणीय कृति है।

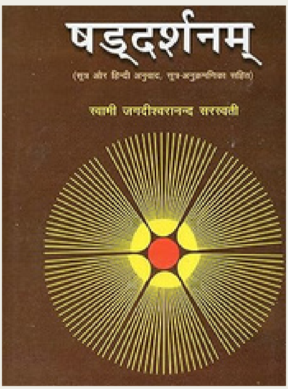

डा० सुभाष चंद्र आर्या
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग

महाविद्यालय परिवार

प्राचार्य

प्रो॰ (डॉ॰) शर्मिला सक्सेना

प्राध्यापक वर्ग

अर्थशास्त्र विभाग

डॉ॰ विश्वनाथ पाण्डेय

(असि॰ प्रोफेसर)

हिन्दी विभाग

डॉ॰ सुभाष चन्द्र आर्य

(असि॰ प्रोफेसर)

राजनीति विज्ञान विभाग

डॉ॰ दिनेश कुमार

(असि॰ प्रोफेसर)

इतिहास विभाग

डॉ॰ दीपा लोहनी

(असि॰ प्रोफेसर)

समाजशास्त्र विभाग

डॉ॰ इला बिष्ट

(असि॰ प्रोफेसर)

अंग्रेजी विभाग

डॉ॰ कौशल कुमार

(असि॰ प्रोफेसर)

भूगोल विभाग

डॉ॰ पारितोष उप्रेती

(असि॰ प्रोफेसर)

वाणिज्य विभाग

डॉ॰ गौरव कुमार

(असि॰ प्रोफेसर)

डॉ॰ राजीव कुमार

(असि॰ प्रोफेसर)

वनस्पति विज्ञान विभाग

डॉ॰ सोनम

(असि॰ प्रोफेसर)

जन्तु विज्ञान विभाग

डॉ॰ दयाकृष्ण

(असि॰ प्रोफेसर)

रसायन विज्ञान विभाग

डॉ॰ साविर हुसैन

(असि॰ प्रोफेसर)

भौतिकी विज्ञान विभाग

डॉ॰ इंदिरा

(असि॰ प्रोफेसर)

कार्यालय

श्री गौरव कुमार
(कनिष्ठ लिपिक)

श्री प्रदीप कुमार (उपनल)
(कनिष्ठ लिपिक)

प्रयोगशाला सहायक

श्री बिरेन्द्र राम
(जन्तु विज्ञान)

श्री शेरसिंह
(भौतिक विज्ञान)

श्री विनोद कबडवाल
(वनस्पति विज्ञान)

श्री योगेश भट्ट
(रसायन विज्ञान)

अनुसेवक

श्री पूरन जलाल (उपनल)

श्री श्याम सुन्दर (उपनल)

श्री सुरेश कुमार (उपनल)

श्री सतीश कुमार (उपनल)

Info Desk

College Website- https://gdcbhikiyasain.in/

College Fb ID- https://www.facebook.com/photo/?fbid=525965566878099&set=a.525965573544765

College Youtube - UCV7z6yOzKf2rhW4jz9qzBfA

SSJU Website- https://www.ssju.ac.in/

Routes to Roots- https://r2rdigital.routes2roots.com/

Skill Development Programme-
https://www.msde.gov.in/

Anti-Ragging-
https://www.antiragging.in/affidavit_affiliated_form.php

Anti Drug-
https://pledge.mygov.in/fightagainstdrugabuse/